गुनाहों का देवता

मेरे लिए इस उपन्यास का लिखना वैसा ही रहा है जैसा पीड़ा के क्षणों में पूरी आस्था से प्रार्थना करना, और इस समय भी मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं वह प्रार्थना मन-ही-मन दोहरा रहा हूँ, बस...

- धर्मवीर भारती

14अक्टूबर की शाम जवाहरलालनेहरु बिश्वबिद्यालय नई दिल्ली के प्रांगण में धरमवीर भारती द्वारा रचित 'गुनाहों का देवता' का नाटक के रूप में मंचन किया गया |जिसका निर्देशन डॉ.रमेन्द्र चक्रवर्ती ने किया जो बहुत सालों से नाटक की दुनिया में सक्रिय हैं और देश-विदेश में नाटकों का मंचन करते रहते हैं | डॉ.चक्रवर्ती ने अपने इस नाटक में धरमवीर की रचना के साथ न्याय और बहुत सटीक ढंग से चित्रण किया हैं |नाटक में सवेदना को शुरू से लेकर अंत तक पकड़ कर रखा हैं |इस नाटक की सबसे बड़ी कड़ी इसका संगीत पक्ष हैं जिसका निर्देशन अंजना घोषाल और दीप्ती ने किया था |इस नाटक में कई गानों का प्रयोग किया गया हैं जिसमें अवधी की झलक साफ़ दिखाई देता हैं संगीत संयोजन में ,जो दर्शकों का मन मोह लेता हैं | इस उपन्यास को नाटक के रूप में रूपांतरित भगत सिंह ने किया जो बहुत ही अदभुत किया हैं क्योकि इतने बड़े उपन्यास को नाटक का रूप देना आसान नही हैं |इस नाटक को भाषा कल्चरल विंग ,बोलीग्राद फाउंडेशन ,स्पीका -डोल एवं सर्व धर्म संवाद के संयोजन से किया गया |जिसमें सर्व धर्म संवाद ने इस नाटक को अपने बैनर तले मंचित कराया |जो समय समय पर सामजिक संस्कृति को प्रोत्साहित करती रहती हैं |

हिंदी में अगर साहित्य की लोकप्रिय किताबों की बात की जाए तो धर्मवीर भारती का उपन्यास '**गुनाहों का देवता**' शीर्ष दस पुस्तकों में होगा। यह उपन्यास सर्वाधिक पढ़े जाने वाले उपन्यासों में से एक है। इसमें प्रेम के अव्यक्त और अलौकिक रूप का अन्यतम चित्रण है।कहानी का नायक चंदर सुधा से प्रेम तो करता है, लेकिन सुधा के पापा के उस पर किए गए अहसान और व्यक्तित्व पर हावी उसके आदर्श कुछ ऐसा तानाबाना बुनते हैं कि वह चाहते हुए भी कभी अपने मन की बात सुधा से नहीं कह - होता वह देवता बने रहना चाहता है और पाता। सुधा की नजरों में भी यही है। सुधा से उसका नाता वैसा ही है, जैसा एक देवता और भक्त का होता है। प्रेम को लेकर चंदर का द्वंद्व उपन्यास के ज्यादातर हिस्से में बना रहता है। नतीजा यह होता है कि सुधा की शादी कहीं और हो जाती है और अंत में उसे दुनिया छोड़कर जाना पड़ता है। इसमें में थोड़ा सेक्सुअल टच तो है, पर वल्गैरिटी कहीं नहीं है, उसमें सिहरन तो है, लेकिन यह दर्शकों को उत्तेजित नहीं पम्मी के साथ चंदर के अंतरंग लम्हों का गहराई से चित्रण करते हुए भी निर्देशक ने पूरी सावधानी बरती है। इस नाटक के पात्र कितने नजदीक हैं उन चरित्रों से, इसका अंदाजा दर्शकों की तालियों से लगाया जा सकता हैं |इसमें चंदर के चरित्र में अंकित पांडेय और रोहित नरवार ने निभाया जोकि किरदार को जी रहे थे नाकि अभिनय कर रहे थे ऐसा देख के लगा लेकिन सुधा के किरदार को प्रतीक्षा कुमार ने आपने भावों के

माध्यम से उसकी ज़िन्दगी के पड़ाव को दिखाने कोई कसर नही छोड़ी |डॉ.शुक्ला(अर्जुन दिवानराम),बुआ और पम्मी (मेघना मेहरोत्रा),बर्टी (तरुण बैसला),बिनती (स्नेहा),गेसू (एकता एवं संगीता),बिसररिया (अरविन्द),ठाकुर (प्रवीण कुमार),महराजिन (अभिनव), जेनी (संगीता) एवं कैलाश (सुमित) इन सारे कलाकारों ने बखूबी अपने अभिनय शैली से दर्शकों का मन मोह लिया |इसके अलावा मंच के पीछे शिखा ,अनूप ,अर्पित ,नितिन सिंह नेगी ,शिशिर उन्याल और राजकुमार यादव ने अपने- अपने काम को बड़ी सिद्दत से किया जिसमें नाटक की सफलता छुपी होती हैं | प्रकाश -व्यवस्था में अजय ने रंगों के प्रयोग से दृश्यों में एक आत्मा फूंक दी |लेकिन अंजना घोषाल ने अपने गानों में जो सुर दिया तो नाटक की आत्मा में एक नई जान फूंक दी तो दिनेश जी ने अलाप से नाटक के दृश्यों को जोड़ने का काम किया |किसी भी नाटक की सफलता कलाकारों पे निर्भर करती हैं परन्तु यहाँ पे निर्देशक ने नए कलाकारों से ऐसे पात्र करा ले गए जो आज के तारीख में निर्देशक नही करते हैं लेकिन डॉ.चक्रवर्ती अक्सर नए कलाकारों से अभिनय कराने में दक्ष माना जाता हैं | उनके किसी भी नाटक को देखे तो उन्होंने ऐसी प्रस्तुतिया दी हैं जो समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं |जबकि इस नाटक का शिल्प बहुत कठिन था |अगर दृश्यों को देखे तो पता चलता हैं कि नाटक का सौन्दर्यबोध दृश्य सज्जा में साफ़ दिखाई देती हैं |यह नाटक जाति- व्यवस्था पर गहरा प्रहार करता हैं जिसके कारण आज समाज में बहुत सी कुरीतिया आ गयी हैं |यह नाटक आज भी प्रसांगिक हैं क्योंकि हमारा समाज आज भी इसी में लिप्त हैं |शायद इसलिए निर्देशक ने इस कृति को चुना होगा |

इस नाटक में कहीं -कहीं ये कमी जरुर दिखाई दे रही थी कि अगर ओपन थिएटर के अलावा सभागार में किया गया होता तो जो कलाकारों को बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ा |नही करना पड़ता क्योकि हवाई जहाज का आना जाना लगा रहता था जो दर्शको का ध्यान भंग करता था |लेकिन इन सब के अलावा सर्व धर्म संवाद के इस प्रकार के आयोजन जो होते हैं उससे समाज को नया आयाम मिलता हैं |